शून्यवाद

Sunyavada

Ans: शून्यवाद बौद्ध दर्शन के मुख्य सम्प्रदायों में गिना जाता है। कुछ विद्वानों ने इस मत का प्रवर्तक नागार्जुन को माना है। इनका जन्म दक्षिण भारत में हुआ था। इनके जन्म का समय दूसरी शताब्दी था। नागार्जुन की माध्यमिक कारिका इस का आधार है। अश्वघोष भी जिन्होंने बुद्ध चरित की रचना की, शून्यवाद के समर्थक थे। डा० चन्द्रधर शर्मा ने नागार्जुन को शून्यवाद का प्रवर्तक मानने में आपत्ति प्रकट की है। इसका कारण वे यह बताते हैं कि नागार्जुन के पूर्व भी महायान-सूत्र में शून्यवाद का पूर्णतः उल्लेख हुआ। नागार्जुन माध्यमिक सम्प्रदाय के सबसे महान दार्शनिक थे। उनके मतानुसार शून्यवाद को संगत रूप में जनता के बीच उपस्थित करने का श्रेय नागार्जुन को दिया जा सकता है। प्रो० विधुशेखर भट्टाचार्य ने भी नागार्जुन को शून्यवाद का प्रवर्तक नहीं माना है। उनके विचारानुसार नागार्जुन ने शून्यवाद को क्रम-बद्ध रूप में उपस्थित किया है। इस विवेचन से प्रमाणित होता है कि नागार्जुन शून्यवाद के मुख्य समर्थक थे। वे एक ऐसे समर्थक थे जिन्होंने शून्यवाद को पुष्पित किया, उसे सँवारा तथा उसे व्यवस्थित रूप प्रदान किया। अतः नागार्जुन को शून्यवाद का अग्रणी कहना प्रमाण संगत है।

साधारणतः शून्यवाद से यह समझते हैं कि संसार शून्यमय है। दूसरे शब्दों में किसी भी वस्तु के अस्तित्व को नहीं मानना तथा पूर्णतः निषेध को मानना ही शून्यवाद कहा जा सकता है परन्तु शून्य-शब्द का यह शाब्दिक अर्थ है। माध्यमिक-शून्यवाद में शून्य का प्रयोग दूसरे अर्थ में किया जाता है। परन्तु अधिकांशतः पाश्चात्य एवं प्राच्य विद्वानों ने 'शून्य' शब्द के शाब्दिक अर्थ से प्रभावित होकर शून्यवाद को गलत समझा है। कुछ विचारकों ने शून्यवाद को सर्ववैनाशिकवाद भी कहा है परन्तु शून्यवाद को वस्तुतः वैनाशिकवाद कहना भ्रामक है। यह तभी उपयुक्त होता है जब शून्यवाद किसी भी वस्तु का अस्तित्व नहीं मानता।

Scanned with CamScanner

अब प्रश्न उठता है कि 'शून्य' शब्द का माध्यमिक-मत में क्या अर्थ है? शून्य का अर्थ माध्यमिक मत के शून्यता नहीं है। इसके विपरीत शून्य का अर्थ वर्णनातीत है। नागार्जुन के अनुसार परमतत्व अवर्णनीय है। मानव को वस्तुओं के अस्तित्व की प्रतीति होता है। परन्तु जब वह उनके तात्विक स्वरूप को जानने के लिए तत्पर होता है, तो उसकी बुद्धि काम नहीं देती। वह यह निश्चय नहीं कर पाती कि वस्तुओं का यथार्थ स्वरूप सत्य है या सत्य का असत्य दोनों है या न तो सत्य है या असत्य है। या सत्य या असत्य दोनों नहीं है या न तो सत्य है और न सत्य ही है।

विश्व के विभिन्न विषयों को हम सत्य नहीं कह सकते हैं। के किसी - ~~न किसी वस्तु पर आश्रय~~ क्योंकि सत्य का अर्थ निरपेक्ष होता है। विश्व की विभिन्न वस्तुओं को हम असत्य भी नहीं कह सकते हैं, क्योंकि प्रत्यक्ष होती हैं और असत्य होता है वह आकाश कुसुम की तरह बिल्कुल अप्रत्यक्ष होता है। विश्व के विषयों को हम सत्य और असत्य दोनों नहीं कह सकते हैं, क्योंकि ऐसा कहना व्याघातक होगा। विश्व के विषयों के सम्बन्ध में यह भी नहीं कह सकते हैं कि वे न तो सत्य हैं और न असत्य हैं। क्योंकि ऐसा कहना पूर्णतः बुद्धि-विरोधी होगा। वस्तुओं का ~~वास्तव~~ स्वरूप इन चार कोटियों से रहित रहने के कारण 'शून्य' कहा जाता है।

माध्यमिक पारमार्थिक सत्ता को मानते हैं, लेकिन वे अवर्णनीय बताते हैं। उदाहरण के लिए हम कह सकते हैं कि वे प्रत्यक्ष जगत के परे पारमार्थिक सत्ता को मानते हैं लेकिन वे उसे वर्णनातीत कहते हैं।

नागार्जुन ने प्रतीत्य समुत्पाद को भी शून्यता कहा है। प्रतीत्यसमुत्पाद के अनुसार वस्तुओं की पर-निर्भरता पर बल दिया जाता है। कोई भी वस्तु ऐसी नहीं है जिसकी उत्पत्ति किसी और पर निर्भर नहीं।

Scanned with CamScanner

अतः वस्तुओं की पर-निर्भरता की तथा उनकी अपेक्षा-नीनता को शून्यवाद कहा गया है।

~~[illegible]~~

शून्यवाद को सापेक्षवाद भी कहा जाता है। सापेक्षवाद के अनुसार वस्तुओं का स्वभाव अन्य वस्तुओं पर निर्भर होता है। किसी भी विषय का अपना कोई निश्चित-निरपेक्ष तथा स्वतन्त्र स्वभाव नहीं है। किसी भी वस्तु को निरपेक्ष रूप से सत्य नहीं कहा जा सकता है। शून्यवाद विषयों की पर निर्भरता को मानता है। अतः इसे सापेक्षवाद कहना समीचीन है।

शून्यवाद को मध्यम-मार्ग भी कहा जाता है। बुद्ध ने अपने जीवन में प्रवृत्ति और निवृत्ति में मध्यम-मार्ग अपनाया है। बुद्ध ने अपने आचार-शास्त्र में विषय-भोग तथा आत्म बलिदान इन दोनों का त्याग करके बीच का रास्ता अपनाने का आदेश दिया परन्तु मध्यम मार्ग जिसकी चर्चा हम यहां करने जा रहे हैं। उपर्युक्त मध्यम-मार्ग से पूर्णतः भिन्न है।

शून्यवाद को मध्यम-मार्ग कहते हैं, क्योंकि यह वस्तुओं को न तो सर्वथा-निरपेक्ष तथा आत्म-निर्भर और न पूरा असत्य ही बतलाता है। सत्य और असत्य जैसे एकान्तिक मतों का निषेध कर शून्यवाद वस्तुओं पर निर्भर अस्तित्व को मानता है। बुद्ध ने प्रतीत्य-समुत्पाद को भी इसीलिए मध्यम-मार्ग कहा है। मध्यम-मार्ग को अपनाने के कारण शून्यवादी को माध्यमिक कहा गया है।

नागार्जुन अपनी चतुष्कोटि न्याय का प्रयोग करके सब विषयों का असत्त्व सिद्ध करते हैं। वे उत्पत्ति का खंडन करते हैं। वस्तु न स्वयं से उत्पन्न हो सकती है और न अन्य वस्तु से उत्पन्न हो सकती है। वस्तु स्वयं

और वस्तु से भी उत्पन्न नहीं हो सकती है, इसलिए उत्पत्ति असम्भव है। इसी प्रकार नागार्जुन पंच स्कन्ध, द्रव्य-गुण और आत्मा को असद् सिद्ध करते हैं। कार्य-कारण सिद्धान्त भ्रम है। क्योंकि बुद्ध के मतानुसार कोई भी वस्तु अकारण नहीं है, इसलिए समस्त विश्व भ्रममात्र है। सभी-अनुभव भ्रममात्र है।

उक्त विवेचना से प्रतीत होता है कि शून्यवाद एक नकारात्मक सिद्धान्त है परन्तु शून्यवाद को नकारात्मक सिद्धान्त कहना भूल है। डा० राधाकृष्णन ने शून्यता भावात्मक सिद्धान्त बतलाया है। शून्यता सभी विषयों का आधार है।

Scanned with CamScanner